GSEB Std 10 Hindi Textbook Solutions Chapter 5 मीरा के पद

GSEB Class 10 Hindi Solutions मीरा के पद Textbook Questions and Answers

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.
मीराबाई किसकी भक्ति करती थी ?

प्रश्न 2.
मीराबाई को कौन-सा धन मिल गया है ?

प्रश्न 3.
पैरों मे धुंघरू देखकर मीरा की सास ने उन्हें क्या कहा ?

प्रश्न 4.
मीरा को विष का प्याला किसने भेजा ?

प्रश्न 5.
किसकी कृपा से मीरा ने 'राम रतन धन पाया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.
गिरधर गोपाल की भक्ति करते हुए मीराबाई ने किस-किसका त्याग किया ?
उत्तर :
मीराबाई ने श्रीकृष्ण को अपने जीवन का एकमात्र आधार बना लिया था। इसके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया था। उन्होंने : अपने भाई, बंधु, परिवार तथा नाते-रिश्ते के सभी लोगों का त्याग कर - दिया था।

प्रश्न 2.
मीरा के 'राम रतन धन' की क्या विशेषताएँ हैं ?
उत्तर :
मीराबाई ने अपने सद्‌गुरु की कृपा से 'रामरतन धन' नामक अमूल्य वस्तु प्राप्त की थी। मीराबाई उसे अपने जन्म-जन्मांतर की पूंजी मानती हैं। इस धन की ये विशेषताएँ हैं कि यह न तो खर्च होता है और न कोई चोर इसे चुरा सकता है। इसमें रोज-रोज सवाई वृद्‌धि होती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 3.
मीरा इस भवसागर को किस प्रकार पार करना चाहती हैं ?
उत्तर :
मीराबाई को अपने सदगुरु पर अपार श्रद्धा है। वे उन्हें ही भगवद्भक्ति प्राप्त कराने का आधार मानती हैं। वे सत्य (सच्चाई) की उस नाव पर बैठकर भवसागर पार करना चाहती हैं, जिसके खेवनहार उनके सद्गुरु होंगे।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1.
भक्ति के मार्ग में कौन-सा संकट आया? उससे मीरां कैसे पार हुई?
उत्तर :
मीरा कृष्ण की अनन्य भक्त थीं। कृष्ण के प्रेम में डूबकर उन्होंने सारी दुनियादारी भुला दी थी। मीरां कृष्ण की भक्ति में दीवानी हो गई थीं। यह सब राणाजी को पसंद नहीं आया। उन्होंने मीरां को जान से मारने के लिए जहर से भरा हुआ प्याला उनके पास भेजा। मीरां इससे विचलित नहीं हुई। उन्होंने यह जहर हंसते-हंसते पी लिया। पर इस जहर का मीरां पर कोई असर नहीं हुआ।

प्रश्न 2.
मीरा के पदों के आधार पर सत्गुरु की महिमा का वर्णन कीजिए ।
उत्तर :
कहावत है 'बिनु गुरु ज्ञान न होइ'। गुरु का महत्व सभी ने माना है। मीराबाई ने सदगुरु को बहुत महत्त्व दिया है। मीरां सांसारिक जीवन को त्यागकर अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण की भक्ति पाकर मगन हैं। वे इसे रत्न की उपमा देती हैं। वे इस अनमोल वस्तु को प्राप्त कराने का श्रेय अपने सदगुरु को ही देती हैं और कहती हैं कि 'रामरतनरूपी धन' उन्हें उनके सदगुरु की कृपा से प्राप्त हुआ है। सदगुरु की कृपा इस संसाररूपी सागर में नाव के समान है। इस नाव में बैठकर मीरा सुरक्षित रूप से इस भवसागर को पार करने के प्रति निश्चिंत हैं, क्योंकि इस नाव के खेवनहार उनके सदगुरु होंगे। इस प्रकार मीरा के पद में सदगुरु को बहुत महत्त्व दिया गया है।

प्रश्न 3.
भक्ति में लीन मीरा को लोग क्या-क्या कहते थे ? और क्यों ?
उत्तर :
मीराबाई श्रीकृष्ण के प्रेम में रंगते-रंगते संसार के प्रति विरक्त हो गई थीं। उन्होंने सांसारिकता को बिलकुल भुला दिया था। मीरां श्रीकृष्ण के प्रेम में पैरों में घुघरू बाँधकर नाचती थीं। यह देखकर लोग उन्हें 'पागल' कहने लगे थे। वे साधुओं की संगति में बैठती थीं। यह देखकर लोग उनकी खिल्ली उड़ाया करते थे। उनकी सास और राणा को मीरां का भक्तिभाव बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। इसलिए सास उन्हें 'कुलनाशिनी' कहती थी और राणा को लगता था कि ऐसे प्राणी को जीवित

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ही नहीं रहना चाहिए। इसलिए उन्होंने मीरा को जान से मारने के लिए विष का प्याला ही भेज दिया था। इस प्रकार भक्तिभाव में लीन मीरां को लोग तरह-तरह से संबोधित करते थे।

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

प्रश्न 1.

जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायौ ।

उत्तर :

मीराबाई अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण के प्रेम की दीवानी हैं। उन्हें प्राप्त करने के लिए उन्होंने अपने भाई, बंधु, परिवारजनों और सभी सगे-संबंधियों से रिश्ता तोड़ लिया है। उन्होंने तरह-तरह की बदनामिया सही हैं और लाज-शर्म सबको तिलांजलि दे दी है। कहने का अर्थ यह है कि उन्होंने अपना सर्वस्व गवाकर अपने जन्म-जन्मांतर की राम नामरूपी अमूल्य पूंजी प्राप्त की है। यह ऐसी पूंजी है जिसका कोई जोड़ नहीं है।

प्रश्न 2.

सत् की नाव खेवटिया सत्गुरु भवसागर तरि आयौं ।

उत्तर :

सच्चाई मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है। यदि कोई व्यक्ति सच्चे मन से अपने आराध्य देव का ध्यान करे और उसे सद्गुरु का सहयोग प्राप्त हो, तो व्यक्ति को भवसागर से मुक्ति पाना कठिन नहीं है। मोरांबाई को अपने सदगुरु पर अटूट विश्वास है। उनके लिए सदगुरु की कृपा इस संसाररूपी महासागर में नाव के समान है। इस नाव के सहारे वे सुरक्षितरूप से इस भवसागर को पार कर लेगी, इस बात का उन्हें पूरा विश्वास है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in